रामपना

RAMNESS

पार्ट–8

प्रस्तुतकर्ता :–

रामराज्य आहवाहन मिशन

Website : www.ramrajyaahwahan.com
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

प्रमुख कार्यालय :
ए 1, बी 2, पुष्पा अपार्टमेन्ट–III, 44ए, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद जिला गाजियाबाद (यू0पी0)
फोन नं0 0120–6516399, 09313055063

! ठहरो !

धरती पर, दोबारा से रामराज्य जैसी खुशियां लाने मे हमारा सहयोग करे।

रामराज्य आह्वाहन मिशन

वैबसाईट देखें :

www.ramrajyaahwahan.com

नोट : आप भी राम हो सकते हैं, आप कहीं न कहीं के राजा हैं, आप किसी न किसी बात के धनी हैं, आप अपने परिवार या अपने व्यापार के राजा ही तो हैं, भगवान ने हर एक को बनाया हैं। अपना राज्य तथा अपना धन पहचानें और अपने राज्य को रामराज्य जैसा बनाकर, इस दुनिया में रामराज्य लाने में हमारा सहयोग करें।

मिशन को जानने के लिए सम्पर्क करें।

A1 & B2, पुष्पा अपार्टमैंट–III, 44A, राजेन्द्र नगर, सैक्टर 5, साहिबाबाद, जिला गाजियाबाद

फोन नं0 : 0120–6516399, 9313055063

E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

"मिशन सोचता है कि परिवार एक राज्य ही तो है, व्यापार एक राज्य ही तो है इसका मुखिया एक राजा ही तो है। हर राजा अपने राज्य को ऐसे क्यों नहीं चलाता जैसे राम जी अपना राज्य चलाया करते थे जब आप ऐसा चाहने लगेंगे, तो आप राम जी की तरह राज्य करना सीख भी जाऐंगे ही एवं जब आप राम जी की तरह राज्य करना सीख जाऐंगे तो रामराज्य ही करेंगे और क्या करेंगे। आपको भी आनन्द आ जाएगा आपके परिवार को भी आनन्द आ जाएगा और फिर धीरे धीरे रामराज्य ही होगा आप शुरु करें तथा अपने राज्य में रामराज्य बनाऐं।"

सभी बुजुर्ग चाहते है हमारे बच्चे अच्छे हों। बड़े अपने बच्चों पर गर्व कर सकें। विषय विचारणीय है क्योंकि बच्चे तो बड़ों से ही सीखते हैं। हम सभी परमपिता परमेश्वर की सन्तान है हम भी हमारे बच्चे भी। भगवान के लिए तो हम बच्चे बड़े सभी समान है क्योंकि बच्चों में व हममें सिर्फ इतना ही तो फर्क है कि हम कुछ समय पहले पैदा हुए हैं तथा बच्चे कुछ साल बाद में मगर भगवान के लिए तो सभी समान हैं। अतः सबसे पहले हमें अपने परमपिता की अच्छी सन्तान बनके दिखाना होगा अगर हम एक अच्छी सन्तान होंगे तो अवश्य ही एवं ज्यादातर हमारे बच्चे भी अपने को एक अच्छी सन्तान बनकर ही दिखाऐगें निश्चित है। अब अच्छेपन को तो एक सही मार्ग से ही बनना होगा अब ऐसा तो नहीं हो सकता कि नियम हमारे लिए कुछ और होंगे तथा हमारे बच्चों के लिए कुछ और होंगे। इस बात को समझें, पहचानें, भगवान की मन्शा पहचाने अच्छेपन की गंगा खुद ब खुद ही उचित मार्ग पर आ जाएगी। आप अपने पर भी गर्व कर सकेंगे एवं अपने बच्चों पर भी तथा अपने बच्चे भी अपने बुजुर्गो पर गर्व कर सकेंगे। ध्यान रखें भगवान हम पर गर्व करना चाहते हैं।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

राजा अर्थात एक कांटों का मुकुट। सभी जानते हैं तथा जो भी राजा अपने मन को मजबूत करके इसको इस प्रकार नहीं निभाता उसका राज्य दुखी रहता है उसके

राज्य का खुश रहना, प्रजा के लिए इसका समृद्ध होना बड़ा मुश्किल होता है।

एक अच्छा एवं योग्य राजा बनने के लिए राजा के मन को उचित शिक्षाओं का उचित वातावरण का मिलना अत्यन्त आवश्यक होता है। इसके लिए राजा को अपनी शिक्षा के लिए स्थायी स्त्रोत बनाने आवश्यक होते हैं। पांच स्रोत जो निम्नलिखित हैं:–

1. वेद नीति : अर्थात् धर्मनीति यह साधु समाज से, या ऐसे साहित्य के अध्ययन से सीखते रहना होता है।
2. राजनीति :– यह कुशल राजनीतिज्ञों की संगत या ऐसे साहित्य से सीखना होता है।
3. रणनीति :– यह कुशल रणयोद्धाओं से एवं ऐसे साहित्य से सीखना होता है।
4. व्यायाम :– अर्थात योग, उचित दिनचर्या, उचित खान- पान, उचित रहन-सहन स्थापित करना होता है।
5. व्यवहार :– यह व्यवहार कुशल लोगों से, व्यवहारिक साहित्य से, लोकमत से उसे सीखना होता है।

इस प्रकार राजा को अपने मन का निरन्तर एवं अपना उचित प्रशिक्षण करना होता है एवं तदउपरान्त अपने सद्विवेक से अपनी एवं अपने राज्य की कार्यनीति, कर्मनीति तय करनी होती है ताकि सारी प्रजा, सारे पड़ोसियों, सारे राजा समाज, राज्य के अधिकारियों के मन जीते जा सकें और उनके अपने मनों से नफरत मिट सके तथा वहां प्रेम व सौहाद्रता पले।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

अक्सर कहा जाता है धर्म गुरु भी बताते हैं शायद वेदों में भी कहा गया है कि प्रेम ही ईश्वर है। जब मैं विचार करता हूं तो पाता हूं कि यह शब्द प्रेम एक गूढ़ शब्द है। यह दो रुप में होता है एक तो मोह रुप में दूसरी तरफ सौहाद्रता बस यह फर्क जानना आवश्यक है। ऐसा लिखा गया है कि प्रेम ही ईश्वर है मगर इसके आगे का फर्क जो कि अत्यन्त आवश्यक है कि मोह नहीं सौहाद्रता हां सौहाद्रता ईश्वर है। प्रेम की यह शाखा इन्सान को आनन्द की ओर सच्चे आनन्द की ओर, सच्चिदानन्द की ओर ले जाती है मोह नहीं, मोह रुपी प्रेम नहीं यह तो सिर्फ दुखों की ओर ले जाता है शास्त्रों में तथा वेदों में साफ लिखा है मोह से बचना है। आज के कलयुग में तो लोग सिर्फ मोह को ही प्रेम समझ रहे हैं।

जैसे ही आप मोह एवं सौहाद्रता का फर्क समझते हैं बस वहीं सुख और दुख का भेद कर पाते हैं भगवान को तो सिर्फ ऐसा प्रेम पसन्द है जिसमें भेदभाव न हो जो कहीं कम कहीं ज्यादा न हो निर्विकार, निर्लेप, निर्मल, समरुप, अनवरत अतः और यह सौहाद्रता ही है मोह नहीं हो सकता।

बस अब आप समझ गये हैं आप प्रेम यानि मोह का त्याग कर दें यह दुख देगा तथा सौहाद्रता को गले लगाऐं यही है जो तुम्हे भगवान बना देगा, भगवान से रुबरु करा देगा एवं भगवान का चहेता बना देगा। जीवन को परम लक्ष्य पर पहुंचाकर गौरवपूर्ण बना देगा।

"मूढ़ मन गोविन्द भज, गोविन्द ही एक सार है।
मोह मत कर प्रेम कर, झूठा जगत का प्यार है।।"

जय श्री राम

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

राममय होने का यह प्रभाव है कि इन्सान धीमे-धीमे विषमता से समता की ओर बढ़ने लगता है तथा समता-समभाव की तरफ बढ़ता चला जाता है। विषमता—कहां, किसमें होती है यह है सुख-दुख, अपना-पराया, आज-कल, अमीर-गरीब, मेरा- तेरा, ज्ञान-अज्ञान जो कि सिर्फ अज्ञानता जनित है अर्थात सिर्फ अज्ञानता की वजह से महसूस होते हैं। जैसे-जैसे इन्सान को इनके होने की वजह होने का कारण समझ में आने लगता है वैसे-वैसे इन्सान की इनके प्रति परवाह, इनकी चिन्ता घटती चली जाती है। तथा ये सब उसको जीवन के सत्य कर्मो के फल परिणाम बस यही लगने लगते हैं तथा उसको इनके होने न होने का दुख नहीं रहता है या इनके होने का अहम् भाव पैदा नहीं होता है। बस यही है राममयता, रामपन, राम की संगत का प्रभाव। श्री राम रामायण में कहते है कि जो इन्सान मेरा भक्त सच्चा भक्त हो जाता है मैं धीमे-धीमे उसे ज्ञानी बना देता हूं वह मेरी कृपा से जीवन के रहस्य के रहस्य जानता चला जाता है तथा चूंकि अविद्या दूर होती चली जाती है। अतः अविद्याजनित रोगों से भी वह दिन प्रतिदिन मुक्त होता चला जाता है यह है राम जी की भक्ति, संगत का फल। हे राम आपकी जय हो आपकी जय हो।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

तुम जब लिखो तो ऐसे ऐसे लिखो कि तुम्हें एक-एक शब्द में राम दिखायी दें जब तुम बोलो तो तुम्हारी भाषा के एक शब्द में राम जैसी मिठास हो, जब तुम अपने को तैयार करो संवारो तो ऐसे संवारो जैसे राम अपने को संवारते हैं, जब चलो तो ऐसे चलो जैसे राम चलते हैं, जब बड़प्पन दिखाओ तो ऐसे दिखाओ जैसे राम दिखाते हैं, जब पढ़ो तो ऐसे पढ़ों जैसे राम पढ़ते हैं, परीक्षा देते हैं, जब अपने काम करो तो ऐसे करो जैसे राम करते हैं, तथा अपने शरणागतों अपने ग्राहकों, अपने निजीजनों के साथ जब व्यापार-व्यवहार करो तो ऐसा जैसा राम करते हैं करके देखो फिर देखो तुम कैसे राम के प्यारे हो जाते हो। यही तो सच्ची भक्ति है यही है सच्चा रामपन तुम आगे बढ़कर देखो अपने इस जीवन में इस तरह राम उतार कर देखो, इसमें राम रुपी मिठास मिलाकर देखो न तुम्हारी जिन्दगी की तस्वीर बदल जाए तो कहना। मेरे दोस्तों राम पुकार रहे हैं तुम्हें अपनाने को अपना बनाने को तथा रामराज्य रुपी खुशियां रामराज्य रुपी आनन्द तुम्हारा इन्तजार कर रहा है। अपने जीवन को गौरवशाली बनाओ अवश्य ही बन जाएगा आगे बढ़ो श्री राम साथ हैं।

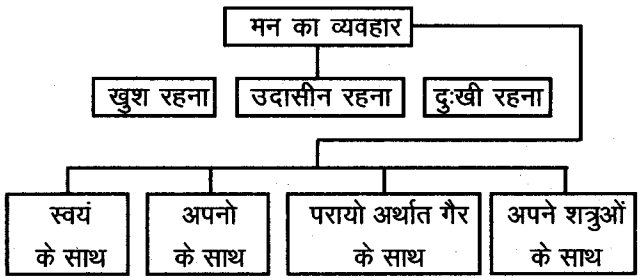

1. **खुद को खुश करना**
   1. मगर दूसरों की खुशी की परवाह करते हुए।
   2. मगर दूसरों की खुशी या ना खुशी से बेपरवाह रहना।
   3. चाहे दूसरों को परेशान दुखी क्यों न करना पड़े।
2. **खुद की खुशी न खुशी की तरफ उदासीन रहना**
   1. मगर दूसरों की खुशी की परवाह करना।
   2. मगर दूसरों की खुशी ना खुशी से भी बेपरवाह रहना।
3. **दूसरों को खुश करना**
   1. मगर अपनी खुशी की भी परवाह करना।
   2. अपनी खुशी न खुशी की भी परवाह न करना।
   3. दूसरों की खुशी के लिए खुद को दुखी भी कर लेना।
4. **दूसरे** : यह हमें समझ आ जाता है जब हम निम्नलिखित भेद को देखते समझते हैं दूसरेपन का एवं अपनेपन का स्तर निम्नलिखित हैं:—
   1. स्वयं
   2. अपने
   3. जो अपने नही है मतलब पराये या दूसरे
   4. दुश्मन/शत्रु

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

"ढोल, गंवार, पशु और नारी ये सब तारन के अधिकारी" अर्थात ढोल गंवार पशु एवं नारी (अबला) इन सबका अपना कोई बल नहीं होता है ये सब किसी न किसी के द्वारा हांके जाते हैं अर्थात हांकने वाले पर ही निर्भर होते हैं अर्थात हांकने वाले का कर्तव्य है कि वह इन्हें कुएं में न ढकेले वरन इनको तारे अर्थात इनकी नैया भी इस ही तरह पार लगाये जैसे कि वह अपनी नैया को पार लगाता है।

आप देख लें ढोल तो बजाने वाले पर ही निर्भर करता है कि वह मधुर ताल बजाता है, नगाड़े बजाता है या सिर्फ शोर करता है। पशु हांकने वाले पर निर्भर करते है उन्हें उचित मार्ग पर हांका जा रहा है या ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर चलाया जा रहा है या कुऐ में नहीं ढकेल दिया जा रहा है या किसी से टकरा दिया जा रहा है। गंवार की भी ऐसी ही स्थिति है उसको बेचारे को कुछ आता तो है नहीं अब पढ़ें लिखे लोग, होशियार लोग उनका उल्लू बनाते हैं, उन्हें हंसी का पात्र बना देते हैं, उन्हें नरक के रास्ते पर रख देते हैं, या उन्हें सिखा समझाकर अच्छा इन्सान बना देते हैं। स्त्री नारी इसकी भी यही स्थिति है यह भी अबला है यह कहती कुछ भी रहे बातें कितनी ही बनाती रहे मगर किसी न किसी से ठगी ही जाती है किसी न किसी का बल पाकर ही अपने को चला पाती हैं अब जो भी इसका संरक्षक उसका बल है उस पर निर्भर करता है कि वह इसको भी तारे इसके जीवन को भी गौरवशाली बनाये नरक की राह पर न रखे उसका जीवन नरक न बनाऐ

बल्कि जन्नत बनाऐ। इस ही वजह से इनको इनकी नैया पार लगाने का जन्म से ही अधिकारी बताया है।

ये सब ऐसे है कि जब इन्हें प्रेम से, प्यार से पाला जाता है तो ये तुम्हारे जीवन में खुशियां भर देते हैं और अगर इनको बिगाड़ा जाता है तो ये तुम्हारा, तुम्हारे आस पास के लोगों का एवं अपना जीवन नरक बना देते हैं। रामायण में लिखा है सकल ताड़ना के अधिकारी सकल अर्थात विकल का उलटा मतलब दुखः बेचैनी अर्थात ऐसी ताड़ना के अधिकारी है जो इन्हें विकलता से बचाती है अर्थात अविकलता से सकल की तरफ ले जाती है अर्थात सुखों, खुशियों, सच्ची राह की तरफ ले जाती है। ऐसी ताड़ना नहीं जो इन्हें विकल करे, दुखी करे, दुख दे या कहो सुखों से दूर कर दे।

अब ये जो तत्व है ढोल गंवार, पशु एवं नारी अब हम इससे आगे चलते हैं अर्थात जो लोग ऐसे हैं अर्थात पशु तो नहीं है मगर गंवारों जैसे है, गंवारों जैसी हरकते करते हैं नारी तो नहीं है मगर नारी जैसे हैं उन जैसे स्वभाव के हैं अर्थात अबला। अब ये सब भी वैसे ही तारन के अधिकारी है, सकल ताड़ना के अधिकारी है किनके द्वारा उनके द्वारा जो शासक है, जो मुखिया है जो पुरुष (बलवान अर्थात पौरुष से युक्त) है या इनके जैसे है। उनका कर्तव्य है कि वे अपने को भी तारें एवं इनको भी तारें तथा अपने पौरुष का भी अपनी शासकीयता का एवं अपने मुखिया तत्व को गौरवपूर्ण एवं भगवान मय सिद्ध करे यही सच्ची सफलता है।

जय श्री राम

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

एक बात है जो प्रसिद्ध है यथा राजा यथा प्रजा अर्थात जैसा राजा होगा वैसी प्रजा होगी अर्थात जैसे कि हर परिवार हर व्यापार एक राज्य ही तो हे अब अगर प्रजा को राम बनाना है, अपनी पारिवारिक प्रजा को राम बनाना है, अपनी व्यापारिक प्रजा को अगर राम बनाना है तो राजा को राम होना पड़ेगा। यही है कारण रामराज्य का क्योंकि वहां राजा राम थे, इस ही वजह से उनकी प्रजा का हर इन्सान राम जैसा हो गया था। आप आज भी यह सब हासिल कर सकते हैं अपने को राम जी की प्रजा मानें, राम जी की कृपा आप पर आ जाऐगी, आप राम से बनने लग जाऐंगे तथा अपनी प्रजा को राम बना पाने लग जाऐंगे। इसको कोरी कल्पना न मानें, यह सत्य है, यह सत्य की राह है, आप इस राह को पकड़ कर तो देखें ये राह भी आपको पकड़ लेगी। सत्य राम ही सत्य है इसमें कोई शक नहीं है। युग कोई भी हो चाहें सतयुग चाहे द्वापर, त्रैता या कलयुग।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

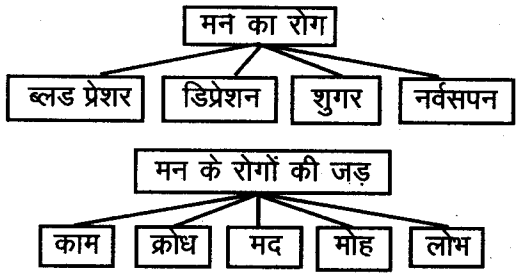

इनमें से किसी की भी अति अन्त बुरा करती है अर्थात एक कहावत अन्त भला तो सब भला को निश्चित रुप से गलत राह अर्थात बुरे अन्त पर ले जाती है।

ये सब ऐसी कामनाऐं है जो आपको एक न एक दिन निराश करेंगी ही चाहें तो आज कर दें या कल कर दें या और कुछ दिन बाद कर दें।

1. **काम :** आपको बलहीन, तेजहीन, ओजहीन बनाता है।
2. **क्रोध :** आपको जीवन में लड़ाई-फसाद को लाता है क्लेशों को लाता है।
3. **मद :** आपको अपने से ताकतवर से भिड़वाता है जो एक न एक दिन आपको हार का मुंह दिखवाएगा।
4. **मोह :** आपको विचलित करता है, बैचेन करता है तथा आपको किसी का गुलाम बनाता है जिसकी वजह से आप चैन से नहीं रह पाते है।
5. **लोभ :** आपसे अपमान जनित काम करवाता है तथा अपमान का खतरा हो जाने का खतरा बनवाता है। अपमान होने पर आपको दुख प्रदान करता है।

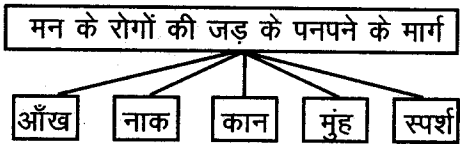

ये ही रास्ते है जहां से मन के रोगों की जड पनपने की गुंजाईश है।

अगर आप इन रास्तों पर पहरा बैठा दें तो पूरी गुंजाईश है कि आपका मन स्वस्थ रहे।

1. **आँख :** आप क्या देख रहे हैं, अच्छा या बुरा, शोभनीय या अशोभनीय यह आपके मन को प्रभावित करता है जाने कब आप में अश्लील, अशोभनीय बुरे की चाह बन जाए पूर्णतः सम्भव है।
2. **नाक :** आप कैसी गन्ध ले रहे हैं पवित्र, अपवित्र या दूषित या बदबूदार इससे आपका मन प्रभावित होता है आप देख सकते हैं अच्छी खुशबु लगाते है मन महकता है, बदबू सूंघते है तो आपको उल्टी आ जाती है। और ज्यादा समय बदबू में रह ले तो हैजा जैसी बीमारी होने का भी खतरा उत्पन्न हो जाता है।
3. **कान :** आप क्या सुन रहे हैं संगीत, मीठी वाणी, शोर, गालियां, तारीफ या प्रवचन ये आपके मन को छेडते हैं आपने काम, क्रोध, शालीनता, विनम्रता, खुशी आदि उत्पन्न करते हैं।
4. **मुंह :** मुंह या कहो जिव्ह्या (जीभ), अब आप मुंह से क्या खा रहे हैं, स्वादिष्ट, पवित्र, बे स्वाद, अपवित्र, खराब, गला, सड़ा जैसा आप खाते हैं वैसा ही पाचन होता है तथा वैसा ही प्रभाव उसका आपके मन पर पड़ता है।

5. **स्पर्श :** अर्थात त्वचा के द्वारा ग्रहण करना अब आपको कैसा स्पर्श हो रहा है कोमल, प्यारा सा, कर्कश, पवित्र स्पर्श, अपवित्र स्पर्श, पानी का, गन्दगी का इस ही से आपका मन प्रभावित होता है।

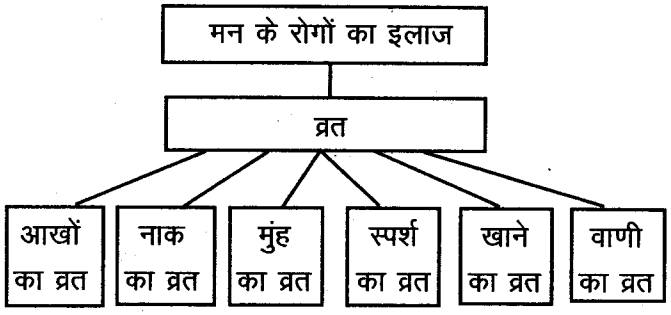

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

ऊँ साम्ब सदा शिवाय नमः

ऊँ नमः शिवाय

हे प्यारे भोलों, हे प्यारे भोले के भक्तों, हे भोले के उपासकों, हे भोले के निजीजनों मैं आपको भोले की ऐसी गहरी सेवा पर आपका आभार प्रकट करता हूं शिव शंकर भोले भंडारी आप सबके जीवन में सुखों का भण्डार भरें।

भोले आप सबके जीवन के दुखों को अब दूर करना चाहते हैं आपका जीवन सच्चा एवं सुखमय बना देना चाहते हैं बस आओ एवं आगे बढ़कर भोले की बताई गई राह को पकड़ना होगा, उस पर चलना होगा तथा यह

एक भोले की सच्ची सेवा होगी, जो निम्नलिखित है।

1. श्री शिवशंकर भोले भंडारी हमारे गुरु जगद्गुरु है जो हमेशा राम नाम का जाप करते हैं तथा हमेशा राममय रहते हुए श्री राम के रामपन का गुणगान करते रहते हैं। हमारा फर्ज है कि हम अपने गुरु अपने भगवान के द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चले, राम-नाम को अपना गुरु मन्त्र जानें उसका निरन्तर जाप करें तथा भोले की कृपा पायें।
2. जब कोई राम-राम रटता है राम-नाम को जपता है तो गुरु शिव कृपा का अधिकारी हो जाता है वह धीरे-धीरे राममय होने लग जाता है उसमें रामपन आने लग जाता है उसका मन सच्चा होने लग जाता है तथा भोले उसे देख देखकर खुश होने लग जाते हैं।
3. हे भोलों आप अपने परिवार एवं व्यापार के राजा है क्योंकि इसके मुखिया है और अगर मुखिया राम या राम जैसा हो जाएगा तो तुम्हारे राज्य में अर्थात तुम्हारे परिवार में, तुम्हारे व्यापार में तुम्हारी कर्मभूमि में रामराज्य जैसा सुख, वैसी समृद्धता वैसी खुशहाली वैसा प्रेम हो जाएगा और शंकर जी आपके रामराज्य को देख देखकर खुश होंगे एवं तुम पर अपनी कृपा बरसाऐंगे।
4. श्री शिवशंकर भोले भंडारी कैलाश के राजा ही तो है वे वहां राम जैसे रहते हैं राममय रहते हैं तो अपने परिवार माता पार्वती, श्री गणेश जी, श्री कार्तिकेय जी, नन्दी जी सभी समाज सर्प, राक्षस, देवता आदि सभी को खुश रखते हैं एवं राममय

रहते हुए जहां सब आपस में कैसे प्रेम से रहते हैं। हे भोलों आप अपने गुरु, अपने माता-पिता शिव परिवार से सीखें अपने राज्य को उसमें चाहें कैसे भी लोग हों उन्हें कैसे पालना चाहिए।

5. सभी भोलों से प्रार्थना है कि सब मिलकर धरती पर रामराज्य अपने परिवार, अपने व्यापार, अपनी कर्मभूमि को रामराज्य, जैसा बनाना शुरु करें जो अपना गुरु मन्त्र राम-नाम जपकर, राममय होकर, रामपन सीखकर बनने लग जाएगा तथा श्री शिव शंकर हम पर गर्व करने लग जाऐंगे।

जय भोले। बम बम भोले। भोले आपकी यात्रा आपकी कांवर आपकी रामराज्य की यात्रा सिद्ध करें कि आप अपने भोले पर गर्व कर सकें एवं भगवान आप पर गर्व कर सके।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

1. खाने से पहले 11 बार 'राम' या 'हे राम' या 'राम राम' कहें ताकि भोजन के दोष दूर हो जाऐं।
2. अपने भोजन में सुबह-शाम दो तुलसी जी की पत्तियां जरुर लें।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

प्रोफेशनल : अर्थात बुद्धिजीवी वर्ग अर्थात बुद्धि के बल पर पैसा कमाना पहले समय में ठग हुआ करते थे जिनको इंग्लिश में कहते है Touts इनकी भी तो आज के प्रोफेशनल्स से तुलना की जा सकती है जिसको चार सौ बीसी भी कहा जाता है।

एक प्रोफेशनल को हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि हम ठगी तो नहीं कर रहे, शायद आज ज्यादातर यही हो रहा है बुद्धि का नकाबपोशी दुरुपयोग।

जब हम अपनी बुद्धि का प्रयोग करके दूसरे को फंसाते हैं एवं उसकी जेब से पैसे निकलवा लेते हैं तथा पीड़ित व्यक्ति को बाद में पता चलता है कि अरे यार कुछ नहीं मुझे तो उसने अपनी बातों से प्रभावित करके, दिखावा करके मुझसे पैसा ले लिया तथा अब है कुछ भी नहीं तो बस यही ठगी है। तथा जब अपनी बुद्धि के द्वारा व्यक्ति को नये नये कल्पित भय से भयभीत कराकर पैसा निकालते हैं तो यह ठगी है।

अब दूसरी तरफ प्रोफेशनल का सही मतलब है किसी समस्या का डाक्टर। डाक्टर बीमारी उत्पन्न करने के लिए नहीं है बीमारी का इलाज करने के लिए है।

अब जितने भी प्रोफेशन बने हैं, हैं ही क्या बस लोगों को जितने प्रकार की समस्याऐं या कह लें जितने प्रकार की बीमारियां होती जा रही हैं इतनी बीमारियों के डाक्टर बनते जा रहे हैं जैसे इलैक्ट्रिशियन बिजली की बीमारी के लिए, सी.ए. करों की बीमारी के लिए, एम. बी.ए. व्यापार को मैनेज करने की बीमारी के लिए, टीचर अज्ञानता की बीमारी के लिए आदि। अर्थात आजीविका अपने परिवार का भरण पोषण करने हेतु रोजी रोटी कमाने के साधन। आप लोगों की समस्या हल कीजिए लोग आपको धन देंगे बिलकुल ठीक है लोग धन देंगे बिल्कुल ठीक है क्योंकि मूलतः ऐसा ही

सोचा गया था। यह है सम्बन्ध समस्या एवं समाधान का तथा इस व्यवहार में कमी हो रही है।

1. लोग समस्या तो हल करा लेते है समाधान का प्रतिफल नहीं देते हैं या इतना नहीं देते है जितना समाधान करने वाला चाहता है।
2. लोग समाधान का पैसा तो ले रहे हैं मगर समस्या हल नहीं कर रहे हैं या वैसा हल नहीं दे रहे हैं जैसा हल समस्या वाला चाहता है।

अब यह सब क्यों होता है यह इसलिए कि समाधान के प्रतिफल या समस्या के हल का पहले से पूर्ण परिभषित न होना जिसकी कई वजह होती है। जैसे :–

1. समाधान का प्रतिफल प्रोफेशनल इस वजह से नहीं खोलता कि अभी बताया तो ग्राहक कहीं और न चला जाए, बाद में उसकी देने की क्षमता को पहचान कर उसकी खुशी-खुशी देने की क्षमता को पहचान कर या इसका हाथ दबाकर अर्थात उसे मजबूर करके ले लिया जाएगा। कई बार फीस का प्रोफेशनल को ही पता नहीं होता कि समस्या आगे कैसी निकलेगी कितनी बड़ी हो जाएगी शुरु में ही तयकर देगा या तो ग्राहक को नुकसान हो जाएगा प्रोफेशनल को नुकसान हो जाएगा।
2. समस्या के हल का प्रारुप : यह भी ग्राहक कई बार बताते हुए घबराता है कि कहीं इतनी बड़ी समस्या ही न हो और मैंने ज्यादा हल की कामना बता दी तो कहीं प्रोफेशनल अपनी फीस न ज्यादा बढ़ा ले।

ऐसा है ये व्यवहार इसमें दोनों ही पक्ष मन-मन में अपनी कामनाऐं बनाते रहते हैं मगर कहते बिल्कुल नहीं है बताते बिल्कुल नहीं हैं कहा जा सकता है ठीक भी है अगर इसको खोला जाएगा तो व्यवहार में कडवापन एवं रुखा आ जाएगा, एक अपसी प्रेम खत्म हो जाएगा या कहा जा सकता है आपसी प्रेम तो व्यवहार में नही होता हां आपसी प्रेम का दिखावा होता है वह भी ठीक है न से कुछ अच्छा।

मैं आपको बताना चाहूंगा कृष्णावतार में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि मैं हमेशा खेती में विश्वास करता हूं धरती से फसल उगाता हूं उससे जीवन यापन की उचित उचित शिक्षा अपनी प्रजा को देता हूं ताकि वह आत्म निर्भर हो।

अर्थात एक किसान का जीवन जहां इन्सान का एवं भगवान का सीधा नाता है। जैसे :–

किसान कई बार बंजर भूमि को धीमे-धीमे उपजाऊ बनाता है, बोता है पता नहीं कितनी फसल मिले न मिले।

किसान फसल बोता है पता नहीं कितना फल मिले कम मिलेगा या ज्यादा मिले।

किसान फसल बोता है कई बार जंगली-जानवर, पालतु-जानवर नष्ट कर देते हैं।

किसान फसल बोता है भगवान बारिश नहीं करता, भगवान बाढ़ ला देता है आदि तथा फसलें खराब हो जाती है।

मगर किसान एवं भगवान के सम्बन्ध कभी खराब नहीं होते। कल से फिर शुरु दोनो आपस में खेलते रहते हैं तथा जीवन में उस ही से आनन्द करते रहते हैं तथा किसान के जीवन को सच्चा जीवन कहा जाता है क्योंकि दोनो आपस में लड़ते नहीं हैं खेलते हैं एक दूसरे के सामने समर्पण रखते हैं एवं एक दूसरे का सम्मान रखते हैं तथा आपसी प्रेम व सौहार्द्रता बनाऐ रखते हैं।

बस यही है नजरिया जो हर व्यापारी का, व्यवसायी का, प्रोफेशनल का, डॉक्टर का जो होना चाहिए। सब किसान, (व्यापारी, व्यवसायी, प्रोफेशनल) एवं भगवान (ग्राहक) ही तो हैं। आपस में प्रेम व सौहार्द्रता से रहना चाहिए पैसे के लिए आपस में कभी लड़ना नहीं चाहिए ध्यान रखें जब पैसे के लिए लड़ा जाता है तो जीवन में लड़ाईयां बहुत बढ़ जाती हैं और कभी-कभी तो निपटानी भारी हो जाती हैं। नफे, नुकसान, फसल अच्छी होना, फसल का बरबाद होना तो इन्सान एवं भगवान का खेल है जो हमेशा से रहा है आज भी है और हमेशा रहेगा यही सत्य है यही सत्य है। आप तो सभी एक किसान हैं फसल बोते रहें, उसे उगाते रहे, उसे बचाते रहें, उसे अच्छी बनाते रहें, तथा जो फल मिले उसका आनन्द उठाते रहें कभी-कभी फसल खराब भी हो जाऐ बरबाद भी हो जाऐ तो यह तो भगवान हैं खेलेंगे ही उसके लिए कभी लड़ें नहीं दूसरों को दुख न पहुंचाऐं। प्रेम व सौहार्द्रता तो हर हालत में बनाऐं ही रखें यही जीवन एक सच्चा जीवन एक किसान जैसा जीवन हो

जाएगा। तथा किसान भगवान श्री कष्ण को या सभी को बहुत प्यारे लगते हैं।

जय श्री राम

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

भगवान ने मुझे आज एक स्वप्न दिखाया कि एक नवदम्पति कहीं बाहर गये हैं बाहर जाकर ठहरे हैं स्त्री कहीं बाहर काम से गयी वहां के इलाके का सबसे बड़े सरकारी आफिसर के लोगों ने उस स्त्री का अपहरण कर लिया तथा उस सरकारी आफिसर के पास पहुंचा दिया गया। पति बेचारा उस ताकतवर ऑफिसर का क्या करे उस नयी शादीशुदा स्त्री जो खूबसूरत एवं अच्छे स्वभाव वाली समझदार है उसके मन की दुर्गति हो गयी हमेशा के लिए। वह क्या करे तो भगवान दिखाते हैं कि यह प्रबल समाजिक संस्थाओं का फर्ज है कि आगे आऐं एवं उसे अर्थात् उस अधिकारी को इसका दण्ड दें जो वाजिब हो। वहां सुबह ही तमाम जैसे R.S.S. (आर.एस.एस.) के खाकी नेकर पहने लोगों ने उस पर धावा बोल दिया जिनके सामने सबको (सरकार सहित) झुकना पड़ता ही है।

1. यह सब कुकृत्य जो हो सका उसका कारण था इन्सान की सरकारी ताकत सर्वप्रथम उसे सरकारी तौर पर निर्बल बना दिया जाना चाहिए इतना निर्बल कि जैसे उस स्त्री का मन वहां रोज-रोज अपमानित महसूस कर रहा है वैसे ही यह भी रोज-रोज अपमानित हो जैसे चपरासी बना दो, मजदूर बना दो।

2. यह पाप इस वजह से हो सका क्योंकि उसमें पैसे का बल आ गया उसका सारा पैसा सारा धन सम्पत्ति सरकारी कोष में जब्त कर लो क्योंकि जब गरीब होगा तभी तो एक चपरासी या मजदूर की तरह जी सकेगा।

3. उसकी पत्नी के साथ अन्याय न हो जाए क्योंकि वह तो एक बड़े घर की है उसने तो एक बड़े समझदार अमीर इन्सान से शादी की थी उसके साथ अन्याय क्यों हो उससे पति का सुख क्यों छिने वह गरीबी में क्यों जिए उसके बच्चे क्यों दुखी हों तो स्त्री को सोचना होगा कि उसका पति दारु पीकर गाड़ी चला रहा था, दुर्घटना हुई वह उसमें मारा गया क्योंकि यह एक दुर्घटना है जो उसके पति की लापरवाही से हुई अतः उसके पास विकल्प होने चाहिएं।

(a) वह अपने पति को छोड़ दे एवं अपने बच्चों को लेकर अपना जीवन यापन करे। सरकार पत्नी की योग्यता उसकी कुशलता देखकर उसकी समझदारी जाँच परख कर उसे अच्छी से अच्छी नौकरी प्रदान करे तथा सरकार ने जो धन जब्त किया उसमें से सरकार अपना नुकसान घटाकर बाकी उनका माने एवं उसके द्वारा उन स्त्री बच्चों को मुफ्त बढ़िया पढ़ाई मुफ्त सुविधाऐं प्रदान कराये ताकि उनका जीवन अच्छा हो। तथा पत्नी अपने शारीरिक सम्बन्धों के सुख की खातिर चाहे तो अपने पति से सम्बन्ध रख सकती है या बच्चों को पिता का सुख भी मिले

इस खातिर पति को अपने साथ भी रख सकती है मगर परिवार की मुखिया पद पति से छिन चुका है मुखिया परिवार की पत्नी ही होगी।

इस प्रकार मैं सोचता हूं तथा देख पाता हूं कि सही है सही मायने में एक इतनी बडी सामाजिक समस्या का यही हल है तथा यही उचित हल है तथा रामराज्य जैसा राम जी के जैसा दिये जाने वाला दण्ड सन्तों के द्वारा दिये जाने वाला दण्ड ऐसा ही होता है जो एक तरफ ही नहीं चारो तरफ देखता है।

(b) यह जो घटना हुई उस उस पुरुष की अत्यधिक कामी मानसिकता की वजह से हुई अतः वह पुरुष अगर गैर शादीशुदा है अर्थात उसकी पत्नी नहीं है तो ऐसे मामले में उसको नपुंसक कर दिया जाना चाहिए। क्योंकि हम मानते हैं कि काम इच्छा तो सभी में होती है कौन कामी नहीं है मगर अपने पर संयम तो रखना होता है अपनी काम वासना का इतना दुरुपयोग तो नहीं किया जा सकता है कि किसी गैर स्त्री जो उस पुरुष के ऐसे अधिकार क्षेत्र में नहीं है उस स्त्री के मन की उसने दुर्गति कैसे कर दी उसका जीवन बरबाद कैसे कर दिया अतः उसको अपने इस असंयम व अपने कुकृत्य का परिणाम भुगतना ही चाहिए।

ऐसे अगर दण्ड होंगे तो मुझको लगता है कि लोग ऐसे कर्म करने की जगह संयम रखना ज्यादा पसन्द करेगे एवं समाज खुद ब खुद संयमित रहेगा।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

लोग मुझसे कहते हैं कि तुम पर राम की बाते हैं मगर राम नहीं है बिल्कुल सही बात है राम कहां से होंगे राम हर जगह थोड़े ही रह जाते हैं। उनके लिए शुद्ध स्थान चाहिए, पवित्र स्थान चाहिए, अनुशासन चाहिए, स्वस्थता चाहिए, अब उनको अगर बुलाना है तो उनकी जैसी पवित्रता शुद्धता लानी होगी वरना उनकी मर्यादा कैसे रहेगी और मैं तो एक सामान्य इन्सान हूं जो सुबह से शाम तक अनगिनत संसारिक कार्यों में, सांसारिक कामनाओ में, सांसारिक भावनाओं में एवं सांसारिक दोषों में पड़ा रहता हूँ मैं कैसे उम्मीद करुं कि मुझमें राम होंगे राम का मतलब है कि अगर वे किसी को छू दें तो उसका उद्धार हो जाता है, अगर किसी की तरफ देख दें तो उस पर भगवान की कुदरत की कृपा बरसने लग जाती है, किसी को अपना लें तो उसके तो उसके तो उसके बल्कि उसके कुटुम्ब तक का भगवान से नाता हो जाता है।

मैं तो बस सिर्फ इतना ही चाहता हूँ कि जैसे भगवान ने मुझे रास्ता दिखाया कि यह दुनिया मुझ पर गर्व कर सके, मेरा परिवार मुझ पर गर्व कर सके, मेरी प्रजा मेरे शरणागत मुझ पर गर्व करें, मेरे अधिकारी मेरे मालिक मुझ पर गर्व करे, मैं जीवन का सच्चा सुख भोंगू कि मैं इसके लिए प्रभु श्री राम की दिखायी राह पर चलूं अपने को राम जैसा बनाउं क्योंकि वही गौरवपूर्ण है। जैसे कि अगर मै श्री राम के समय में उनकी प्रजा होता तो क्योंकि श्री राम की प्रजा सुखी थी, क्योंकि ज्ञानी थी, प्रजा खुशहाल थी, क्योकि प्रभु श्री राम की छत्रछाया

थी बस मेरा तो मन है कि वैसा सुखी मैं भी हो जाऊं जैसे रामराज्य में सभी सुखी थे जो कि श्री राम जी ने अपने प्रशिक्षण, परवरिश द्वारा से उनको कर दिया था। अर्थात वे रामपन सीख गये थे तथा रामपन में जीने लगे थे अतः धीमे-धीमे राम जैसे हो गये थे अर्थात अपने राज्य के राम जैसे राजा हो गये थे तभी सब जगह रामराज्य जैसा माहौल हो गया था।

यही कारण है कि मैं अपने राज्य को जो मुझे भगवान ने दिया है अर्थात मेरा परिवार, मेरा व्यापार, मेरी कर्मभूमि जिसको सुखी बनाने की मेरी कामना हो गयी है एवं इसके लिए प्रभु ने मुझे रामपन में जीने का रास्ता दिखाया है और मैं पा रहा हूँ कि मैं रामपन मे जीकर धीरे-धीरे अपनी मंजिल की तरफ अर्थात अपने राज्य को सुखी करने की तरफ बढ़ रहा हूं और देख रहा हूं कि इस पर चलने का अंजाम यही होगा कि यह दिन प्रतिदिन गहरा रहा है एवं साफ लग रहा है कि एक न एक दिन धीमे-धीमे यह मेरे राज्य को रामराज्य जैसा बना ही देगा और मेरा राज्य खुशहाल हो ही जाएगा। चूंकि मुझे एक ऐसा रास्ता मिल गया है जो कलयुग मे सतयुग का रामराज्य का माहौल बना देता है तथा जिसमे निश्चितता है तथा जिसमे असीमितता है तथा जो गौरवपूर्ण है मैं उस रास्ते को एक पूर्णभाषित रास्ता जो कोई भी जो भी अपने परिवार के लिए सुख चाहता है बना दे रहा हूं ताकि जैसे मेरा उद्धार हो रहा है सभी का ऐसे उद्धार हो सके। भगवान मुझे सिखाने, समझाने, पढ़ाने में जो मेहनत कर रहे हैं वह व्यर्थ न जाए एवं सभी के काम आ जाऐ।

आज मैं देखता हूं कि जितना रामपन मुझमें आ गया है उतना रामराज्य भी मेरे राज्य मे आ गया है। और जितना रामपन मुझमें आता जाएगा जितना ज्यादा से ज्यादा राम जैसा मैं होता जाऊंगा उतना ही मेरा राज्य रामराज्य जैसा खुशहाल होता जाएगा।

अब इस रामपन से मैं सीख रहा हूं कि राजा जैसा होगा उसका राज्य वैसा होगा अर्थात अगर मुझे अपने राज्य को रामराज्य जैसे सुख रामराज्य जैसी खुशहाली, देनी है मुझे राम जैसा होना ही होगा राम जैसा राजा होना ही होगा अर्थात राम जैस पवित्र, राम जैसा शुद्ध, राम जैसा स्वथ्य, राम जैसा अनुशासित, राम जैसा विनम्र, राम जैसा कृपालु, राम जैसा विवेकी, एवं समझदार होना ही होगा क्योकि जब ऐसा होगा तभी मै श्री राम का प्रतिबिंब हो सकूंगा एवं तभी यह भी तय है जब मेरे शरीर को मैं राम जैसा पवित्र शुद्ध एवं स्वस्थ कर लूंगा तो वहां राम भी आ ही जाऐंगे और अब यह मेरी जरुरत भी है कि मैं अपने को एक अच्छा राजा साबित करुं ताकि मेरा राज्य मुझ पर गर्व कर सके।

यही है इस राह का परिणाम कि प्रभु धीमे-धीमे स्वयं ही तुम्हें ऐसी राह पर पहुंचा देते हैं कि तुम्हारा मन करने लग जाता है कि मुझे भी यही बनना है एवं धीरे-धीरे सब हो जाता है। हे प्रभु श्री राम! ईश्वर करें कि मैं आपका मान बढाऊं एवं रामराज्य बनाकर दिखाऊं।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

'जय शनिदेव'

हे शनि भक्तो हे शनि उपासको एवं श्री शनि महाराज के निजी जनो मे सबसे पहले श्री शनि भगवान की तरफ से आपका आभार प्रकट करता हूँ भगवान श्री शनि जी महाराज आप सबके जीवन को सुखी खुशहाल एवं समृद्ध करे।

मेरी आप सबसे गुजारिश है कि अब समय बदल रहा है भगवान आप सबके जीवन को खुशहाल देखकर खुश होना चाहते हैं आप अपने भगवान की उनके इस नेक काम में मदद करें तथा जो वह राह दिखा रहे हैं जो कि निम्नलिखित है को अपने जीवन मे उतारें ताकि आपके जीवन मे खुशहाली आ सके एवं आप सबका जीवन धन्य एवं गोरवपूर्ण हो सके।

आप अपने इष्ट का नाम अर्थात उनका गुरु मंत्र जो वे निरन्तर जपते हैं अन्यथा अपना गुरु मंत्र जो आपके गुरु ने आपको दिया हुआ हो उसका निरन्तर जाप करें और अगर आप के पास कोई नाम नही हैं राम-नाम को जपें क्योंकि यह एक सिद्ध नाम हैं जिसको सभी भगवान जपते हैं ताकि यह उनमें निरन्तर रामपन महानता भगवानपन अपने भक्तों एवं शरणागत वत्सल सरल एवं सच्चेपन को ओत-प्रोत करता रहे उससे लबालब रक्खे ।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

राज्य दो तरीके से चलाया जाता है एक लड़ाओ और शासन करो (Divide and rule) एवं दूसरा दिलों को जीतकर (By winning hearts) पहला तरीका ही बस रामराज्य होने से, आपके राज्य को रामराज्य बनने से रोकता है एवं दूसरा तरीका ही रामराज्य है। पहले तरीके से राज्य चलाने वाले लोग मान ही नहीं पाते, समझ ही नहीं पाते कि शासन किसी और तरीके से भी हो सकता है। रामराज्य के तरीके से शासन करने वाले लोगों को काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है मगर दूसरों के दुख दूर होते देखकर उनको बहुत खुशी मिलती है उनके लिए यह खुशी बहुत बड़ी दौलत होती है एवं जिन राज्यो को ऐसा राजा मिल जाता है वे राज्य धन्य हो जाते हैं।

(Divide and rule) चारों तरफ दुख बढ़ाता है तथा इसके बनाऐ हुए दुख ही अक्सर इसे भी घेर लेते हैं तथा इसे अपने को भी सुखी करना बड़ा कठिन हो जाता है क्योकि इन्सान जो बोता है वही काटता है अभी नहीं काटता तो अगले जन्म मे काटता है मगर है सत्य। इस शासन पद्धति मे राजा निम्न प्रकार से दुख उत्पन्न करता है।

1. आपस मे लोगों मे सहयोग की भावना उत्पन्न नहीं होने देता है अर्थात सबको सहयोग के सुख से वंचित करता है।
2. अपनी गलती को दूसरे के सिर मढ़ता है अर्थात ऐसे नुकसान जो खुद करता है उसका आरोप

दूसरों पर लगाता है तथा उसे सिद्ध करने के लिए जतन करता है।

3. दूसरे गलत सिद्ध हों तथा वह सही सिद्ध हो या ऐसा महसूस कराता है कि वह तो उसका हितैषी है मगर दूसरे उसके लिए अनहितकारी है तथा दूसरो को नुकसान देने वाला सिद्ध करने के लिए जतन करता है कि ऐसे जानबूझ कर नुकसान भी करता है चुपके से कि दूसरो को गलत एंव अहितकारी सिद्ध किया जा सके।

4. यह दूसरों का हित करने की जगह सिर्फ महसूस कराने की कोशिश करता है कि वह सिर्फ हित करता है फायदे कराता है।

5. इनकी यह एक अच्छी बात है कि ये अपना एवं अपनों का बहुत ख्याल रखते हैं हाँ बस इतना है कि इनका अपना या अपनों का दायरा बहुत कम होता है बहुत छोटा होता है इस ही वजह से इनके अपने इनके लिए जान छिड़कते हैं काश ये भगवान के सभी बन्दों को अपना मान पाते।

अब आप देख सकते है कि ऐसी नीति एंव ऐसी नीति वाले लोग समाज के लिए कितने घातक अपने आस पास वाले लोगों के लिए कितने घातक होते हैं भगवान की परेशानी कितनी बढ़ाने वाले होते हैं।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

लोग कहते हैं बच्चो में संस्कार माँ-बाप से आते हैं अर्थात संस्कारों का बड़ा भारी महत्व है तो पहली बात तो यह है कि माँ-बाप के कैसे संस्कार हैं क्योंकि समाज पर दुनिया पर तो उस ही का प्रभाव पड़ेगा जैसे लोगों के संस्कार होंगे। अतः अब तरीका है कि अच्छे संस्कारो की व्यवस्था क्योंकि आवश्यक नहीं कि माँ-बाप के संस्कार अच्छे ही हों मगर बच्चों का भविष्य, बच्चों का जीवन तो खराब न हो जाए। ऐसे में इलाज है संस्कार तो ऐसे ही दिए जाने चाहिएं जो सर्वोत्तम हैं अब जब सर्वोत्तम का प्रयास किया जाएगा तो कुछ तो अच्छा होगा ही। हो सकता है सर्वोत्तम भी हो जाए। अब सर्वोत्तम संस्कार क्या हैं यानि कि एक सर्वोत्तम पुरुष जिसे सभी सर्वोत्तम मानते हैं इन्सान भी एवं भगवान भी और वो हैं श्री राम अर्थात श्री राम के संस्कार जो संस्कार वे देते हैं जो संस्कार वे देना चाहते हैं। अब ये कैसे दिए जाएं बस बड़ा आसान रामचरितमानस इसका अध्ययन इसका मनन इसकी वार्ता जब ऐसा होगा तो जीवन मे श्री राम के संस्कार घर कर जाऐंगे। माँ-बाप का फर्ज है रामायण नित्य प्रति अक्सर थोड़ी बहुत पढ़ें तथा पढ़ाते रहें। हममें भी, हमारे बच्चों में भी ऐसे संस्कार धीमे-धीमे आ ही जाऐंगे तथा सही में, सच में अपना भी, अपने बच्चों का भी, अपने समाज का भी, भगवान का भी, इस दुनिया का भी सच्चा भला होगा।

जय श्री राम

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

रामराज्य आह्वान मिशन

काश! हम सब भी श्रीराम जैसे अच्छे स्वामी, श्रीराम जैसे अच्छे कर्मचारी, श्रीराम जैसे अच्छे मैनेजर, श्रीराम जैसी अच्छी प्रजा होते तो इस दुनिया का तो सुखी होना, आनन्द से भरपूर होना तय था।

"आओ रामपन सीखे एवं राम जैसे हो जाऐं"

www.ramrajyaahwahan.com

हमारे दोस्त बने एवं धरती पर रामराज्य लाने का चैलेंज स्वीकार करें

बस अगर आप हमारे दोस्त बनना चाहते हैं तो आपको किन्हीं 3 घरों/व्यापारों में 'रामराज्य' बनाने का लक्ष्य साधना होगा तथा उसमें हम भी आपका साथ देंगे। इसके लिए आपने निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना है।

- आप बस सिर्फ काम बनाऐं, कभी भी कोई काम बिगाड़ें नहीं, न अपना, न किसी और का।
- आप सिर्फ समझाऐं, सिर्फ समझाऐं मगर जबरदस्ती न करें, दूसरे के समझने का इन्तजार करें सब्र रखें।
- आप सिर्फ प्रेमपूर्ण (सौहार्द्रतापूर्ण) वातावरण बनाऐ, कभी क्लेशपूर्ण नहीं, कभी नहीं।
- आप सभी से करुणापूर्ण, दयापूर्ण, सहयोगी भाव रखें।
- दूसरे ने जो किया, जैसे किया क्यों किया उसकी ऐसा करने की मजबूरी समझें, कभी उससे नफरत या गुस्सा ना करें।
- आप अपने काम बनाते समय ध्यान रखें किसी और का काम न बिगड़ जाऐ, काम सभी के बनने ही चाहिऐं, समन्वय बैठाऐं।
- बस ऐसा करें, एवं करते ही रहें, एक दिन सब अच्छा हो जाएगा, अभ्यास करते रहें, करते रहें, अभ्यास से आप इस कला में पारंगत हो जाऐंगे।

अभ्यास से अर्जुन ने ऐसा तीर चलाना सीख लिया था जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता, आप भी यह सब सीख जाऐंगे।

यही तो 'राम' हैं, यही तो रामराज्य है।

जय श्रीराम